10-2-68

प्रातः क्लास ओमशान्ति शिव बाबा याद है? 10-2-68

ओमशान्ति रूहानी बच्चों को रूहानी बाप बैठ कर समझाते हैं। भक्ति अलग चीज़ है, ज्ञान अलग चीज़ है। और शरीर निर्वाह अर्थ व्यापार आद करना वह अलग चीज़ है। वह तो भक्ति मार्ग में करना होता है। ज्ञान मार्ग में भी करना होता है। सतयुग में भी तो खावेंगे-पीवेंगे व्यापार आद करेंगे ना। भक्ति मार्ग में भी करेंगे। परन्तु वह होता है पवित्र गृहस्थ व्यवहार, यह होता है अपवित्र गृहस्थ व्यवहार। शरीर निर्वाह अर्थ तो सब कुछ करना होता है। बाकी ज्ञान और भक्ति यह दोनों अलग चीज़ हैं। मनुष्य जब विकारी है तो भक्ति करते हैं। निर्विकारी मनुष्य भक्ति नहीं करते हैं। सतयुग में भक्ति होती नहीं। बाकी शरीर निर्वाह अर्थ तो सब कुछ करते ही हैं। वह तो शरीर का धर्म है। बाकी भक्ति बिलकुल अलग है, ज्ञान अलग है। मनुष्य भक्ति करते हैं जिसका फल भगवान आकर देते हैं। भगवान को आना पड़ता है ना। क्या फल, क्या वर्सा, या क्या जायदाद देंगे। नई दुनिया की जायदाद। तो ज्ञान और भक्ति यह यह मनुष्य का अलग कर्तव्य है। भक्ति करते हैं फिर ज्ञान लेना है सदगति के लिए। ऐसे नहीं कि भोजन खाया जाता है सदगति के लिए। वह अलग है। बाप कहते हैं गृहस्थ व्यवहार में रहते, शरीर निर्वाह अर्थ कर्म करते पवित्र रहो। बाकी तुम भक्ति आधा कल्प से करते आये हो। जिससे दुर्गति को पाया है। अब आया हूं तुमको रचता और रचना के आदि मध्य अन्त का ज्ञान देने लिए। बाकी शरीर निर्वाह अर्थ कर्म करना है। वह अलग है। पवित्र जरूर बनना है। वह है ही वायसलेस वर्ल्ड, शिवालय। खाते-पीते शरीर निर्वाह अर्थ कर्म करते हैं पवित्र रहते हैं। यहां खाते-पीते कर्म करते सब पतित ही है। यहां हैं पावन। यहां हैं पतित। अब उनको चेंज कौन करे। बुलाते हैं हे पतित पावन आओ। आकर हमको पावन बनाओ। ज्ञान से ही मनुष्य पावनबनते हैं। न कि भक्ति से। सन्यासी लोग भी भ्रष्टाचार से पैदा होते हैं। जन्म लेकर बड़े होकर फिर घर छोड़ते हैं। गोपीचन्द आद राजा थे शादी आद कर बाद में सन्यास आद धारण किया। वह ज्ञान कोई राजयोग नहीं सिखा। राजयोग सिखलाने वाला होता ही एक है। दूसरा कोई सिखला न सके। राजाई होती ही है सतयुग में। बाप तुमको सतयुग का मालिक देवता बनाने आये हैं। तो दैवीगुण भी चाहिए ना। कोई को सिगरेट पीना नहीं छूटता, कोई का शराब पीना, जूआ खेलना नहीं छूटती, विकार नहीं छूटती। तो समझो हम लायक नहीं हैं ऊंच पद के। धनी का बन कर फिर ऐसा कोई गंदा काम न करना चाहिए। सिगरेट पीना, जूआ खेलना, विकार में जाना यह सब पाप है। चोरी करना भी पाप है। कहते हैं ना कब का चोर सो लब का चोर। कई तो चोरी भी करते हैं, छी2 काम करते हैं। बाप कहते हैं तुम तो ब्राह्मण हो। तुमको पवित्रदेवता बनना है। दैवीगुण जरूर धारण करनी है। कोई को रास्ता न बताते हैं यह भी आसुरी गुण है। आसुरी गुण होंगे तो तुम देवता बन न सकेंगे। तूफान आये भल परन्तु कर्मेन्द्रियों से ऐसा कुछ काम न करना है। हवश होती है परन्तु कर्म इन्द्रियों से चोरी आद नहीं करना है। छिपाये कर उठाना न चाहिए। बिगर छूटी यज्ञ से कोई चीज़ उठाई वह भी चोरी है। बहुत हैं जो छिप कर खाते हैं। चोरी करते हैं। यह तो शुरू से ही चला आया है। तुमको मालूम है कोई साथ दुश्मनी होती थी तो उनका कपड़ा फाड़ देते थे। चीज़ उठा लेते थे। यह तो पिछाड़ी तक कचड़ा रहेगा। हल्का पद पाने वाले भी तो हैं ना। बाप तो पुरुषार्थ कराते रहते है, ऐसा देवता बनो। बाप ऐसे थोड़े ही चाहेंगे कि पार्ट-पेरे किसी चोरी कर पद भ्रष्ट बनो। जरा भी कोई बिगर पूछे खाते हैं, तो चोरी का पाप हो जाता है। जिसको ही लोभ कहा जाता है। माया बहुत उल्टी काम कराती है। पता नहीं पड़ता है। कोई भी चीज़ बिगर पूछे न उठानी चाहिए। किसके बिस्तरे पर नहीं बैठना चाहिए। पराई बिस्तरे पर बैठना यह भी चोरी है। यहां तो तुम सेलीबेट हो ना। पता नहीं कैसा बिस्तरा है। हो। छूना भी न चाहिए। बाप कहते हैं सब आसुरी सम्प्रदाय हैं। भार खाते हैं ना। भार विष को कहा जाता है। नानक ने भी कहा है ना असंख्य चोर व हराम खोर .... परन्तु टिकाने में जो बैठ पढ़ाते हैं उन से अर्थ पूछो तो सुनाने में लज्जा आवेगी। इस दुनिया में पावन एक भी हो न सके।

पावन दुनिया है ही सतयुग। साधु, सन्यासी भी पावन बनने लिए स्नान आद करने जाते हैं ना। गंगा के पानी के बीच में बैठ तपस्या करते हैं। सतयुग में यह भक्ति की बातें वा शास्त्र आद कुछ भी नहीं होती। यह सभी हैं भक्ति मार्ग की सामग्री। बाप कहते हैं यह वेद-शास्त्र आद पढ़ने वाले मेरे से मिल न सके। यह तो भक्ति ही करते, वेद-शास्त्र आद पढ़ते2नीचे ही गिरते आये हैं। मेरे से कोई भी मिलते नहीं। सीढ़ी में यह सब दिखाना चाहिए वेद-शास्त्र गीता ग्रन्थ आद2, फिर वहां लिखने चाहिए भगवानुवाच: इन उपनिषद, वेद-शास्त्र आद पढ़ने से कोई भी मेरे को प्राप्त नहीं करते हैं। यह तो हुई ज्ञान और भक्ति की बात।

अब बच्चे शिव जयन्ति मनाने लिए भी तैयारियां कर रहे हैं। यह तो बाबा ने समझाया है शिव बाबा भारत में ही आते हैं। भारत ही सब से बड़ा तीर्थ है। सभी मनुष्यों को पतित से पावन बनाने बाप भारत ही आते हैं। सिवाय एक भारत के बाकी सभी तीर्थ आद वर्थ नाट अपेनी है। भारत की महिमा क्यों नहीं है। भारत तो अविनाशी खण्ड है। क्योंकि अविनाशी परम पिता परमात्मा यहां ही आते हैं। उनकी शिवजयन्ति भी मनाते हैं। वह आते ही हैं सर्व की सदगति करने। कलियुगी वेश्यालय को सतयुगी शिवालय बनाने आते हैं। इसलिए भारत से सब से ऊंच ते ऊंच तीर्थ स्थान है। पाईन्ट तो बहुत है। फारेनरस को भी समझाने में समय लगेगा। भारत अविनाशी खण्ड है। बाकी सभी खण्डों का विनाश हो जाता है। बाप भारत में ही आते हैं। गीता है ही भारत की। संगम युग पर गीता का एपीसुड है। मुख्य गीता ही खण्डन की हुई है यही बड़ी ते बड़ी भूल है। यह अच्छी तरह से समझाओ। गीता श्रीकृष्ण ने नहीं गाई है। कृष्ण तो 84 जन्म लेते हैं। परमात्मा तो पुनर्जन्म लेते नहीं है। यह फारेनर्स को भी मालूम होना चाहिए। यह कानफ्रेन्स आद जो करते हैं वहां यह (गीता का भगवानकौन) चित्र भी ले जाना चाहिए। बताना चाहिए इस भूल से ही भारत दुर्गति को पाया है। भारत की ही एक्ज भूल है। सर्व शास्त्रमई सिरोमणी गीता को खण्डन कर दिया है। बाप कहते हैं कितनी तुम्हारी भूल है। ऐसे देवकुली की भूल कोई कर न सके। जो बाप की वाचोग्राफी में बच्चे का नाम डाल और आधा कल्प पढ़ते रहे। तो झूठी वायोग्राफी पढ़ने कैसा हाल हुआ होगा। यह है तुम्हारी मुख्य बात। यह चित्र बड़े मुख्य स्थानों पर रखना चाहिए। जहां पुलिस आद का पहरा हो। क्योंकि दुश्मन तो तुम्हारे बहुत हैं ना। यज्ञ में आसुरी सम्प्रदाय बहुत विघ्न डालते हैं। कहने से और ही बिगरते हैं। इसलिए गुप्त चुनरी पहननी होती है। कितने बड़े2 हैं। कितना उन्हों का मान है। करते कुछ भी नहीं। रचता औररचना का ज्ञान तो कोई भी मनुष्य मात्र में नहीं है। सिर्फ तुम ब्राह्मण कुल में ही है। उस ब्राह्मणों के कुल में है झूठी गीता। तुम ब्राह्मणों के पास है सच्ची गीता। पहले तो अपने को आत्मा समझो तब ही बाप को याद कर सकते हैं। नहीं तो याद नहीं कर सकेंगे। इस अन्तिम जन्म में ही अपने को आत्मा समझने का प्रैक्टीस करनी है। अपनको अविनाशी आत्मा समझे तब ही अविनाशी बाप को याद करे। आत्मा और परमात्मा के रूप का किसको भी पता नहीं है। मन कहते हैं चमकता है अजब सितारा। परन्तु याद थोड़े ही पड़ता है। तुम कहते हो आत्मा बिन्दी है। परमात्मा भी बिन्दी है। तो हंसी उड़ाते हैं। और आत्मा को रिलाईज करना चाहिए। जिसे आत्मा और परमात्मा का रिलाईज न हुआ है वह जनावर है। पहले तो यह समझना चाहिए मैं आत्मा हूं। मुझ आत्मा को 20 जन्मों का, 50 जन्मों का, 84 जन्मों का पार्ट मिला हुआ है। अच्छा तुम्हारे 20 जन्म पूरे हुए बाकी हमारा कहां था। आत्मा का भी कोई को पता नहीं है। यहां आत्मा और परमात्मा का रिलाईजेशन होता है। जिससे आत्मा का योग परमात्मा बाप से रहे और बाप से वर्सा पा सके। सारा दिन विचार सागर मंथन करना चाहिए अच्छे मन लो। जो होते है वह सवेरे उठ कर भाला फेरते हैं, सोने समय भी भाला फेरते हैं। भक्त लोग जितनी मेहनत करते हैं उतनी यहां बच्चे नहीं करते। उनको तो अल्प काल का सुख मिलता है। यहां तुमको 21 जन्मों का अथाह सुख मिलता है। यह भी धारणा होती रहे तभी भी खुशी का पारा चढ़ा रहे। वेहद का वर्सा हमको पा रहे हैं।

जो सर्विस करने वाले हैं उन्हों को खुशी रहती है। खुशी में ठरते हैं। कोई तो अन्दर जलते जलते मरते रहते हैं। बाप पढ़ा रहे हैं समझते हैं तो देवता बनने पुरुषार्थ करना चाहिए ना। बाबा जो कहे वह करना चाहिए। कब भी लोभ वस चोरी आद नहीं करनी है। कब भी मुख से कुवचन न बोलना चाहिए, भूत न आना चाहिए। बाप समझाते हैं कोई भी बात में मुंझना नहीं। ऐसे नहीं ब्रह्मा कुमारियां ऐसी क्यों हैं। और ब्रह्मा कुमारियां कोई तो राजकुमारी बनेंगी, कोई प्रजाकुमारी भी बनेंगी। चण्डाल का जन्म लेने वाले भी होते हैं ना। वह पूरा पढ़ते नहीं। और ही टीचर का भाषा खपाते हैं। यह भी ड्रामा में है। सभी सेन्टर्स पर ऐसे भाषा खपाने वाले होते हैं। आपस में लड़ पड़ते हैं फिर दो पार्टी कर देते हैं। ऐसे भी है, ब्राह्मणी से भी लड़ पड़ते। अनेक प्रकार के विघ्न पड़ते रहते हैं। मनुष्यों को पतित से पावन बनाने कितनी मेहनत करनी पड़ती है। बाप को जान कर फिर कोई भूल करते हैं तो सौ गुणा डन्ड पड़ जाता। बाप को बुलाया है कि हमको सुखधाम का मालिक बनाओ। कांटे से फूल बनाओ तो श्रीमत पर चलना चाहिए ना। तब ही तो ऊंच पद पायेंगे। नहीं तो कल्प-कल्पान्तर पाई-पैसे का पद पाते रहेंगे। तभी बाप कहते हैं अपना जीवन तो हीरे जैसा बनाओ। भक्ति मार्ग में भी कौड़ी मिशल, ज्ञान मार्ग में भी कौड़ी मिशल जीवन रहा तो बाकी मिला ही क्या। पिछाड़ी में आने वाले को पाई-पैसे का सुख मिलेगा। तुम तो 21 जन्म सुख पाते हो। जैसे दीपमाला पर ढेर के ढेर मच्छड़ जन्मते हैं और मरते हैं। वैसे यहां भी देरी से आने वालों का क्या हाल होगा। उन में और जन्तुओं में क्या फर्क रहा। जन्म लिया थोड़ा सुख पाया, मरा। ऐसा जन्म देने तो बाप नहीं आते हैं। बाप आकर पढ़ाते हैं। कोई तो पुरुषार्थ कर सतयुग में 21 जन्म लिए महाराजा भी बनते हैं। रात-दिन का फर्क है देखो कितना है। नम्बरवार मर्तबे होते हैं ना। कोई राजा प्रेजीडेन्ट आद, कोई बेहतर। इसको कहा जाता है पास्ट के कर्म ऐसे किये हुये हैं तब ही यहां जन्म लिया है। ऐसे नहीं कि शाहुकार तो फिर शाहुकार के घर ही जन्म लेंगे। वह तब ले सकते हैं जब दान-पुण्य करेंगे। और गुण भी अच्छे होंगे। बाबा का देखा हुआ है एक राजा बड़ा ही फर्स्ट क्लास, करोड़ पति था। उनको बच्चा हुआ। राजकुमार ठहरा ना। अहोसौभाग्य राजा पास जन्म हुआ। अच्छा बड़ा होने सेवच्चा संगदोष में आ गया। बाप मर गया वह जो भी पैसे थे 22 साल में सब खत्म कर दिये। जन्म तो अच्छे घर में मिला। फिर कर्म इतने बूरे किया तो फिर दूसरा जन्म क्या मिलेगा। डेड चमार जाये बनेंगे। बहुत शाहुकार लोग वेश्याओं के पास जाते रहते हैं। क्या उनको अच्छा जन्म मिलेगा। तो इसमें भी जो जितना पुरुषार्थ करेंगे श्रीमत पर चलेंगे उतना ही फायदा होगा। जो फरमान मानते ही नहीं तो नाफरमानबरदार ठहरे ना। ऐसे कब भी दिल पर चढ़ न सके। बाप समझाते रहते हैं जब तक चार्ट न रखेंगे तब तक ठीक हो न सके। स्कूल में भी चलन का, पढ़ाई का रजिस्टर होता है ना। बाप कहते हैं तुम अपना रजिस्टर रखो। मालूम पड़े सारा दिन हम क्या करते हैं। शाम को रोज़ अपना चार्ट देखो। जो पाप आद किये होंगे वह याद आये खड़े होंगे। कोई यज्ञ में नियम विरुद्ध कार्य किया होगा तो वह सब सामने आ जायेगा। फिर उस में वह भी लिखो फलाने टाईम यह खाया। फिर यह खाया। वह पिया तो मालूम पड़ेगा कहां लोभ तो नहीं किया। हम कितना बारी दिन में खाते हैं। अब यह खाया-पीया सब लिखना चाहिए। तब ही सुधार होगा। बाप समझाते हैं इनके तकदीर में कुछ है नहीं। रजिस्टर रखते नहीं। समझते थोड़े ही हैं भगवानुवाच है। समझते हैं यह दादा कहता रहता है। बच्चों को मालूम नहीं पड़ता है कौन कहते हैं। कुछ भी रिगार्ड नहीं। पाप करते रहते। रिगार्ड रख न सके। रात को बैठकर सारा दिन के चाल को देखो, सारा दिन क्या खाया पीया। अपने पर नज़र तब रख सकेंगे। नहीं तो भाषापादर लगाती रहती है। बेकायदे बोलते रहते हैं यह भी भाषा के पादर लगती है। इसलिए चार्ट लिखना अच्छा है। इस पर सावधानी मिलेगी ऐसे ऐसे न करो। फिर दूसरे दिन देखो कितना फर्क पड़ा। फिर वही भूल तो नहीं की। यह काम छोड़ देनी चाहिए। अच्छा बच्चों को गुडमोर्निंग

****